AMAR UJALA MY CITY PAGE 7

मानसिक रोगियों के परिजनों की सोचने की क्षमता होती प्रभावित

लखनऊ विवि के शोध छात्र के अध्ययन में आए चौंकाने वाले तथ्य

संवाद न्यूज एजेंसी

लखनऊ। मानसिक विकारों से पीड़ित रोगी अपने परिजनों के मानसिक स्वास्थ्य को भी प्रभावित करते हैं। लखनऊ विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग के शोध छात्र के अध्ययन में इसकी पुष्टि हुई है। इसमें छात्र ने सि जो फ्रे नि या, बाइपोलर डिसऑर्डर और मिर्गी जैसे मानसिक विकारों के रोगियों, उनके परिवारीजनों और स्वस्थ व्यक्तियों के बीच तुलनात्मक अध्ययन किया है।

शोध में घर वालों की सोच का किया गया तुलनात्मक अध्ययन

प्रो. अर्चना शुक्ला व शोधार्थी अभिलाष। स्रोत : स्वयं

लविवि के शोधार्थी अभिलाष सिंह ने मनोविज्ञान की विभागाध्यक्ष प्रो. अर्चना शुक्ला के निर्देशन में अपना शोध कार्य पूरा किया है। इसमें मनोविकारों से पीड़ित रोगियों के प्रथम श्रेणी परिजनों के सोचने की क्षमता और आत्म जागरूकता की तुलना जब स्वस्थ व्यक्तियों से की गई तो पता चला कि इन परिजनों की मानसिक क्षमताएं स्वस्थ लोगों के मुकाबले अलग थीं।

अपने शोध में अभिलाष सिंह ने बताया है कि सिजोफ्रेनिया के मरीजों के प्रथम श्रेणी परिजनों को याददाश्त और निर्णय लेने के कार्यों में अधिक कठिनाइयां थीं। वहीं बाइपोलर डिसऑर्डर और मिर्गी के मरीजों के प्रथम श्रेणी परिजनों में यह समस्या तुलनात्मक रूप से कम थी। शोध में यह भी समझाने की कोशिश की गई है कि मानसिक विकार परिवारों को कैसे प्रभावित कर सकते हैं। जिन व्यक्तियों में इस तरह के विकार पाए जाते है, उनके परिजनों की मानसिक योग्यताओं का मूल्यांकन किया जाना चाहिए जिससे उन लोगों को समय से बेहतर उपचार दिया जा सके।

विश्व में एक से दो प्रतिशत लोग सिजोफ्रेनिया से पीड़ित

- विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक, विश्व में एक से दो प्रतिशत लोग सिजोफ्रेनिया से पीड़ित हैं। 2020 के ग्लोबल बर्डन ऑफ डिजीज स्टडी में बाइपोलर डिसऑर्डर का वैश्विक प्रसार 0.6% से 1.2% के बीच है। 2019 की इसी रिपोर्ट में कहा गया है कि मिर्गी के कारण 1.1% वैश्विक बीमारी का बोझ है। विकसित और विकासशील देशों में यह आंकड़ा एक समान है।

HINDUSTAN PAGE 7

सिजोफ्रेनिया रोगी के परिजनों में याद्दाश्त की कमी का संकट

अध्ययन

लखनऊ, संवाददाता। सिजोफ्रेनिया मरीजों के प्रथम श्रेणी परिजनों को याददाश्त और निर्णय लेने के कार्यों में दिक्कतें होती हैं। उन्हें अपनी मानसिक क्षमताओं का सही से अहसास नहीं होता है। जिसका मतलब है कि वह अक्सर अपनी सोचने की क्षमता को समझ नहीं पाते। बाइपोलर डिसऑर्डर और मिर्गी मरीजों के प्रथम श्रेणी परिजनों में यह समस्या तुलनात्मक रूप से कम दिखी। यह तथ्य लखनऊ विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग में हुए एक अध्ययन में सामने आए हैं।

विभागाध्यक्ष डॉ. अर्चना शुक्ला ने बताया कि यह अध्ययन शोधार्थी अभिलाष सिंह ने किया है। इससे पता चला कि इन परिजनों की मानसिक क्षमताएं स्वस्थ लोगों के मुकाबले अलग थीं। कहा कि यह शोध हमें यह समझने में मदद करता है कि मानसिक विकार परिवारों को कैसे प्रभावित कर सकते हैं।

अध्ययन के अनुसार जिन व्यक्तियों में इस तरह के विकार पाए जाते हैं उन व्यक्तियों के प्रथम श्रेणी परिजनों की मानसिक योग्यताओं का मूल्यांकन किया जाना चाहिए। जिसे उन लोगों के बेहतर उपचार विकसित करने में इस्तेमाल किया जा सकता है।

01 से दो फीसदी लोग विश्व में सिजोफ्रेनिया से पीड़ित

- मानसिक रोगियों से जुड़े कई तथ्य सामने आए
- एलयू में डॉ. अर्चना शुक्ला की अगुवाई में हुआ अध्ययन

विकसित, विकासशील देशों में समान हालात

विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक, दुनिया भर में एक से दो फीसदी लोग स्किजोफ्रेनिया से पीड़ित हैं। डबल्यूएचओ के 2020 के 'ग्लोबल बर्डन ऑफ डिजीज स्टडी' में पता चला है कि बाइपोलर डिसऑर्डर का वैश्विक प्रसार लगभग 0.6 से 1.2 प्रतिशत के बीच है। 'ग्लोबल बर्डन ऑफ डिजीज स्टडी' 2019 के अनुसार, मिर्गी के कारण 1.1 प्रतिशत वैश्विक बीमारी का बोझ है। यह आंकड़ा विकसित और विकासशील देशों में समान रूप से पाया जाता है।

JAGRAN CITY PAGE III

एलएलबी का संशोधित परीक्षा कार्यक्रम जारी

लवि की वेबसाइट से डाउनलोड कर सकते हैं समय सारिणी

जासं • लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय ने एलएलबी तीन वर्षीय (न्यू, ओल्ड कोर्स) रेगुलर एजेम्प्टेड व ओल्ड कोर्स प्रथम, तृतीय, पांचवें सेमेस्टर के परीक्षाओं के कई पेपर की तिथियों में संशोधन कर दिया है। छात्र-छात्राएं विश्वविद्यालय की वेबसाइट https://www.lkouniv.ac.in/ से समय सारिणी डाउनलोड कर सकते हैं। अब एलएलबी (तीन वर्षीय) तीसरे सेमेस्टर की परीक्षाएं 13 जनवरी तक होंगी। वहीं, इसके पांचवें सेमेस्टर की परीक्षाएं नौ जनवरी तक और ओल्ड कोर्स की परीक्षाएं 15 जनवरी तक संचालित की जाएंगी।

शास्त्री की परीक्षाएं 21 से : लवि 21 दिसंबर से शास्त्री की विषम सेमेस्टर परीक्षाएं आयोजित करेगा। इसकी तिथियां जारी कर दी गई हैं। शास्त्री तीसरे सेमेस्टर (एनईपी) की परीक्षाएं 21 से आठ जनवरी, पांचवें सेमेस्टर की परीक्षा 23 से सात जनवरी और पहले सेमेस्टर की परीक्षाएं 10 से 22 जनवरी तक होंगी।

पोर्टल खोलने के लिए सौंपा ज्ञापन : लवि में स्नातक और परास्नातक विषम सेमेस्टर परीक्षा फार्म के लिए पोर्टल फिर से खोलने की मांग को लेकर छात्र नेताओं ने सोमवार को परीक्षा नियंत्रक विद्यानंद त्रिपाठी को ज्ञापन सौंपा। छात्र नेता तौकील गाजी व शुभम खरवार ने कहा कि अंतिम तिथि सात दिसंबर बीतने की वजह से बहुत से छात्र-छात्राएं फार्म भरने से वंचित रह गए हैं। इसलिए छात्रहित में पोर्टल फिर से खोला जाए।

15 तक जमा होंगे नए कोर्स के अनापत्ति प्रस्ताव: सत्र 2025-26 में लखनऊ विश्वविद्यालय से नए पाठ्यक्रमों (बी एड को छोड़कर) के संचालन के लिए कालेजों की अनापत्ति प्रस्ताव 15 दिसंबर तक आनलाइन जमा करना होगा। जमा किए गए प्रस्तावों के भूमि संबंधी अभिलेखों का राजस्व विभाग से सत्यापन 15 दिसंबर से 20 जनवरी तक किया जाएगा। उसके बाद 31 जनवरी तक अनापत्ति आदेश आनलाइन जारी होगा। कुलसचिव विद्यानंद त्रिपाठी ने इस संबंध में कालेजों को पत्र जारी किया है।

पत्र के अनुसार आनलाइन अनापत्ति पर लिए गए निर्णय के खिलाफ शासन में 10 फरवरी तक अपील करने का मौका रहेगा। इसके निस्तारण की तिथि 20 फरवरी है। निरीक्षण मंडल की ओर से पांच अप्रैल तक निरीक्षण आख्या प्रस्तुत करनी होगी। 20 अप्रैल तक विश्वविद्यालय आनलाइन संबद्धता देगा। जिनकी संबद्धता आगामी 30 जून को समाप्त होने वाली है, उन्हें स्थायी सहयुक्तता के लिए निरीक्षण मंडल प्राप्त कर निरीक्षण आख्या समय से उपलब्ध करानी होगी।

लवि : तीन छात्रवृत्तियों में विद्यार्थियों का चयन

लवि की ओर से दी जा रही तीन प्रमुख छात्रवृत्तियों में चयनित छात्र-छात्राओं की सूची जारी कर दी है। इनमें कर्मयोगी, छात्र कल्याण और पीएचडी छात्राओं के लिए शोध मेधा छात्रवृत्ति शामिल है। अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. वीके शर्मा ने सूची के साथ निर्देश जारी किए हैं। इस बार कर्मयोगी योजना के अंतर्गत विभिन्न विभागों से 32 छात्र-छात्राओं का चयन किया गया है। इन्हें पदाइड के साथ विभागों में प्रतिदिन दो घंटे कार्य करना होगा। उसके लिए अधिकतम 15 हजार रुपये दिए जाएंगे। छात्र कल्याण योजना में चयनित 50 विद्यार्थियों की जमा की गई फीस में अधिकतम 15 हजार रुपये रिफंड होंगे। अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. वीके शर्मा ने बताया कि शोध मेधा छात्रवृत्ति योजना पीएचडी शोध छात्राओं के लिए है। इस बार 18 छात्राएं इसके लिए चयनित हुई हैं। इनको अपने-अपने विभाग में अधिष्ठाता छात्र कल्याण की ओर से दिए गए आफर लेटर प्रस्तुत कर संबंधित संकायाध्यक्ष या विभागाध्यक्ष से ज्वाइनिंग सर्टिफिकेट पर कार्यभार ग्रहण कर उसकी प्रति को प्रस्तुत करना है।

रजोनिवृत्ति के विषय में जागरुकता कार्यक्रम

लखनऊ विश्वविद्यालय के महिला अध्ययन संस्थान की ओर से सोमवार को मिशन शक्ति चरण-पांच के अंतर्गत 'मी-नो-पाज टू मेनोपाज (रजोनिवृत्ति) विषय पर जागरुकता सत्र का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन प्रति कुलपति प्रो. मनुका खन्ना ने किया। सत्र में बतौर मुख्य वक्ता टेंडर पाम हास्पिटल की स्त्री रोग विशेषज्ञ डा. दीपा कपूर ने रजोनिवृत्ति के शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की।

मिलेगा प्रतिकर अवकाश

लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय शीतकालीन अवकाश के दौरान लिखित, मौखिक, प्रायोगिक परीक्षाएं एवं मूल्यांकन के लिए शिक्षकों को एक कार्य दिवस के बदले एक प्रतिकर अवकाश देगा। कार्य परिषद में इसकी स्वीकृति हो चुकी है। कुलसचिव विद्यानंद त्रिपाठी ने इसका आदेश जारी कर दिया। लखनऊ विश्वविद्यालय सहयुक्त महाविद्यालय शिक्षक संघ इसका आदेश जारी किए जाने की मांग कर रहा था। (जासं)

वाद-विवाद प्रतियोगिता

लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय के लिंग संवेदनशीलता (जेनसेन) प्रकोष्ठ और एलयूडेबसोक ने मनोविज्ञान विभाग के सभागार में सोमवार को एशियाई संसदीय वाद-विवाद का आयोजन किया। 'सदन इस धारणा का विरोध करता है कि लैंगिक समानता की अवधारणा व्यावहारिक से अधिक आदर्शवादी है।' विषय पर यह कार्यक्रम जेंडर संवेदनशीलता प्रकोष्ठ की संयोजक प्रो. रोली मिश्रा के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया। प्रतिभागियों ने विचार रखे। (जासं)

प्रो. अर्चना बनीं वाणिज्य संकाय की अध्यक्ष

लखनऊ : लवि के व्यावहारिक अर्थशास्त्र विभाग की प्रो. अर्चना सिंह को वाणिज्य संकाय का अध्यक्ष बनाया गया है। उनका कार्यकाल 10 दिसंबर से तीन साल की अवधि अथवा अधिवर्षता आयु पूरी होने या अन्य कोई आदेश होने (जो पहले हो) तक मान्य होगा। कुलसचिव विद्यानंद त्रिपाठी ने पत्र जारी किया। (जासं)

LOKSATYA PAGE 2

मेरे साथ चलना है तुझे के उद्घोष के साथ हुआ कार्यक्रम

लखनऊ, लोकसत्य। लखनऊ विश्वविद्यालय के समाज कार्य विभाग एवं प्रवाह की ओर से #16DaysActivism के तहत महिला हिंसा विरोधी अभियान 2024 के रूप में हस्ताक्षर अभियान एवं नुक्कड़ नाटक का आयोजन हुआ। कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय उपस्थित रहे। आपने हस्ताक्षर अभियान की शुरुआत करते हुए कहा कि हमारा उद्देश्य है कि हम महिलाओं के प्रति हिंसा के विरुद्ध आवाज उठाएं और समाज में जागरूकता फैलाएं। हमें उम्मीद है कि इस हस्ताक्षर अभियान एवं नुक्कड़ नाटक के माध्यम से हम अपने उद्देश्य को प्राप्त कर पाएंगे।

कार्यक्रम मे समाज कार्य विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. राकेश द्विवेदी ने महिलाओं के स्वावलंबन व आत्मनिर्भरता पर बल देते हुए बताया कि आज के हस्ताक्षर अभियान एवं नुक्कड़ नाटक के माध्यम से हम यहाँ बताना चाहते हैं कि हम लिंग आधारित हिंसा को रोकने के लिए जागरूकता फैलाएं। इस नुक्कड़ नाटक के द्वारा दिखाया कि हम लिंग आधारित हिंसा को कैसे रोक सकते हैं और समाज में बदलाव ला सकते हैं।

अभियान

- लखनऊ विश्वविद्यालय के समाज कार्य विभाग एवं प्रवाह का कार्यक्रम

कार्यक्रम के अंतिम चरण में एम.एस.डब्लू. के छात्र-छात्राओं द्वारा नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किया गया। जिसका उद्देश्य महिलाओं पे हो रही हिंसा के प्रति लोगों को जागरूक करना था। कार्यक्रम का आयोजन डॉ रजनीश यादव एवं डॉ संध्या यादव के समन्वय द्वारा किया गया। उक्त कार्यक्रम लखनऊ विश्वविद्यालय के गेट संख्या 3 पर किया गया।

काम के बदले शिक्षकों को मिलेगा अवकाश

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय में शीतकालीन अवधि में मौखिकी, प्रायोगिक परीक्षाएं और मूल्यांकन कार्य करने के बदले शिक्षकों को प्रतिकर अवकाश दिया जाएगा। कार्यपरिषद की बैठक में इस प्रस्ताव को मंजूरी मिलने के बाद कुलसचिव कार्यालय ने इस संबंध में पत्र जारी कर दिया। लखनऊ विवि सहयुक्त कॉलेजेज शिक्षक संघ इसे लेकर लंबे समय मांग कर रहा था। पत्र जारी होने के बाद लुआक्टा अध्यक्ष डॉ. मनोज पांडेय खुशी जाहिर की। (संवाद)

प्रो. अर्चना बनीं संकाय की अध्यक्ष

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय में व्यावहारिक अर्थशास्त्र विभाग की प्रो. अर्चना सिंह को नवीन संकाय अध्यक्ष की जिम्मेदारी दी गई है। वह अगले तीन वर्षों तक इस पद पर अपनी सेवाएं देंगी। कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय की सहमति के बाद कुलसचिव विद्यानंद त्रिपाठी ने पत्र जारी कर इसकी जानकारी दी। (संवाद)

महिला अधिकारों को लेकर करें जागरूक

स्रोत : विवि

लखनऊ। लखनऊ विवि के विवेकानंद द्वार पर समाजकार्य विभाग और प्रवाह संस्था की ओर से नुक्कड़ नाटक का मंचन और हस्ताक्षर अभियान का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम महिला हिंसा विरोधी अभियान 2024 पर आधारित था। मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. आलोक राय ने कहा कि महिलाएं समाज का एक महत्वपूर्ण स्तंभ हैं। हमें इनके खिलाफ होने वाली हिंसा और गलत व्यवहार को लेकर समाज में जागरूकता फैलानी चाहिए। विभागाध्यक्ष प्रो. राकेश द्विवेदी ने महिलाओं के स्वावलंबन व आत्मनिर्भरता पर जोर दिया। संचालन डॉ. रजनीश यादव और डॉ. संध्या यादव ने किया। प्रो. रूपेश कुमार, डॉ. प्रविश प्रकाश, डॉ. शिखा सिंह, डॉ. अनविता, डॉ. गरिमा, डॉ रमेश कुमार त्रिपाठी, डॉ. रणविजय, डॉ. ओमेंद्र, डॉ. शैलजा सहित 200 से अधिक छात्र-छात्राएं मौजूद रहे। (संवाद)

i-NEXT PAGE 6

तीन छात्रवृत्तियों में विद्यार्थियों का चयन

लखनऊ विश्वविद्यालय की ओर से दी जा रही तीन प्रमुख छात्रवृत्तियों में चयनित छात्र-छात्राओं की सूची जारी कर दी है. इनमें कर्मयोगी, छात्र कल्याण और पीएचडी छात्राओं के लिए शोध मेधा छात्रवृत्ति शामिल है. अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. वीके शर्मा ने सूची के साथ निर्देश जारी किए हैं.

युवाओं ने लैंगिक समानता को लेकर रखे विचार

लखनऊ। एलयू में लिंग संवेदनशीलता (जेनसेन) प्रकोष्ठ, अंग्रेजी वाद-विवाद संस्था एलयूडेबसोक की ओर से मनोविज्ञान विभाग के सभागार में एशियाई संसदीय वाद-विवाद का आयोजन हुआ। जेंडर संवेदनशीलता प्रकोष्ठ की संयोजक प्रो. रोली मिश्रा ने बताया कि वाद विवाद में लैंगिक समानता पर छात्र-छात्राओं ने अपने-अपने विचार रखे।

एलयू में डॉ. अर्चना सिंह बनीं डीन कॉमर्स

लखनऊ। एलयू में वाणिज्य संकाय की नई संकायाध्यक्ष के तौर पर व्यवहारिक अर्थशास्त्र विभाग की हेड डॉ. अर्चना सिंह को नियुक्त किया गया है। इस संबंध में कुलसचिव ने आदेश जारी कर दिया है। डॉ. अर्चना अगले तीन वर्ष, अधिवर्षता आयु पूरी होने या अगले आदेश तक इस पद पर रहेंगी।

PIONEER PAGE 3

शीतकालीन अवकाश में कार्य करने पर शिक्षकों को मिलेगा प्रतिकर अवकाश

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

शीतकालीन अवकाश के दौरान लखनऊ विश्वविद्यालय की तरफ से संचालित सेमेस्टर परीक्षाओं से लेकर मूल्यांकन कार्य में ड्यूटी पर रहने वाले शिक्षकों को एक अवकाश के एवज में एक प्रतिकर अवकाश मिलेगा। इस बावत विवि स्तर पर कार्य परिषद के आदेश के अनुरूप आदेश जारी कर दिया गया है। विवि स्तर पर प्रतिवर्ष शीतकालीन अवकाश के दौरान मौखिक से लेकर सेमेस्टर परीक्षाएं और प्रयोगात्मक परीक्षाओं सहित मूल्यांकन कार्य शिक्षकों द्वारा किये जाते हैं। ऐसे में शिक्षकों ने विवि प्रशासन से एक अवकाश के बदले एक प्रतिकर अवकाश की मांग की थी। इस मामले को विवि की तरफ से कार्य परिषद की बैठक में ले जाया गया, जहां पर अनुमोदन दे दिया गया है। अनुमोदन के उपरान्त विवि के कुलसचिव विद्यानंद त्रिपाठी की तरफ से इस बावत अवकाश जारी कर दिया गया है।

AMRIT VICHAR PAGE 4

मीनो पॉज टू मेनोपॉज पर कार्यशाला का आयोजन

अमृत विचार, लखनऊ : लविवि के महिला अध्ययन संस्थान ने मीनो पॉज टू मेनोपॉज शीर्षक से महिलाओं के जीवन महत्वपूर्ण चरण रजोनिवृत्ति (मेनोपॉज) पर जागरूकता सत्र का आयोजन किया गया। सत्र का उद्घाटन प्रो. मनुका खन्ना द्वारा किया गया। टेंडर पाम हॉस्पिटल की स्त्री रोग निदेशक डॉ. दीपा कपूर ने रजोनिवृत्ति के शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की और इस चरण की सूक्ष्मताओं को समझने के महत्व पर जोर दिया। नोडल अधिकारी डॉ. मनीषी श्रीवास्तव ने रजोनिवृत्ति के प्रति जागरूकता बढ़ाने और इस संक्रमणकालीन चरण की पूर्व तैयारी की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का समन्वय दिव्या कपूर और नम्रिता मल्होत्रा द्वारा किया गया।

प्रो. अर्चना सिंह बनीं वाणिज्य संकायाध्यक्ष

अमृत विचार, लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय की व्यावहारिक अर्थशास्त्र की प्रोफेसर अर्चना सिंह को वाणिज्य संकाय का अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। कुलपति डॉ. आलोक कुमार राय की ओर से जारी पत्र में डॉ. अर्चना सिंह को अगले आदेश तक संकाय अध्यक्ष का कार्यभार संभालेंगी।

VOICE OF LUCKNOW PAGE 6

डॉ. मनीषी ने रजोनिवृत्ति के प्रति जागरूकता बढ़ाने पर दिया जोर

वरिष्ठ संवाददाता (vol)

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के महिला अध्ययन संस्थान ने मी-नो-पॉज टू मेनोपॉज शीर्षक से महिलाओं के जीवन के एक महत्वपूर्ण चरण, रजोनिवृत्ति (मेनोपॉज) पर केंद्रित एक जागरूकता सत्र का आयोजन सोमवार को हुआ। सत्र का उद्घाटन प्रतिकुलपति प्रो. मनुका खन्ना ने किया। टेंडर पाम हॉस्पिटल की स्त्री रोग निदेशक, डॉ. दीपा कपूर, मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित थीं। उन्होंने रजोनिवृत्ति के शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की और इस चरण की सूक्ष्मताओं को समझने के महत्व पर जोर दिया। नोडल अधिकारी डॉ. मनीषी श्रीवास्तव ने रजोनिवृत्ति के प्रति जागरूकता बढ़ाने और इस संक्रमणकालीन चरण की पूर्व तैयारी की आवश्यकता पर प्रकाश डाला, ताकि महिलाओं का स्वास्थ्य और कल्याण सुनिश्चित किया जा सके। इस सत्र में संकाय सदस्यों और छात्रों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। 300 से अधिक संकाय सदस्यों और छात्रों ने अपने हड्डी घनत्व का परीक्षण करवाया। कार्यक्रम का कुशल समन्वय दिव्या कपूर और नमिता मल्होत्रा द्वारा किया गया, जिसे इसकी प्रासंगिकता और प्रभावशीलता के लिए अत्यधिक सराहा गया।

महिलाओं के प्रति हिंसा के विरुद्ध आवाज उठायें : प्रो. आलोक

वरिष्ठ संवाददाता (vol)

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के समाज कार्य विभाग एवं प्रवाह के संयुक्त तत्वाधान में #16 डेज एक्टिविज्म के तहत सोमवार को महिला हिंसा विरोधी अभियान 2024 के रूप में हस्ताक्षर अभियान एवं नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में समाज कार्य विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. राकेश द्विवेदी ने महिलाओं के स्वावलंबन व आत्मनिर्भरता पर बल देते हुए बताया कि आज के हस्ताक्षर अभियान एवं नुक्कड़ नाटक के माध्यम से हम यहाँ बताना चाहते हैं कि हम लिंग आधारित हिंसा को रोकने के लिए जागरूकता फैलाएं। इस नुक्कड़ नाटक के द्वारा दिखाया कि हम लिंग आधारित हिंसा को कैसे रोक सकते हैं और समाज में बदलाव ला सकते हैं। कार्यक्रम के अंतिम चरण में एमएसडब्ल्यू के छात्र-छात्राओं द्वारा नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किया गया। जिसका उद्देश्य महिलाओं पे हो रही हिंसा के प्रति लोगों को जागरूक करना था। कार्यक्रम का आयोजन डॉ रजनीश यादव एवं डॉ संध्या यादव के समन्वय द्वारा किया गया। यह कार्यक्रम लखनऊ विश्वविद्यालय के गेट संख्या तीन पर किया गया। इस कार्यक्रम में प्रो. रूपेश कुमार, प्रो. डी कि सिंह, डॉ प्रविश प्रकाश, डॉ. शिखा सिंह, डॉ. अनविता, डॉ. गरिमा, डॉ रमेश कुमार त्रिपाठी, डॉ. रणविजय, डॉ. ओमेंद्र, डॉ. शैलजा सहित 200 से अधिक छात्र छात्राएं उपस्थित रहे।

- लविवि में मेरे साथ चलना है तुझे के उद्घोष के साथ हुआ कार्यक्रम का आयोजन

शीत अवकाश परीक्षा कार्य करने पर एक के बदले एक प्रतिकर अवकाश

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय प्रशासन ने शीत अवकाश में परीक्षा कार्य करने पर एक के बदले एक प्रतिकर का अवकाश आदेश निर्गत किया गया है। इस सम्बन्ध में कुलसचिव विद्यानंद त्रिपाठी ने सोमवार को आदेश जारी कर दिया है। इसका निर्णय कार्यपरिषद के दौरान लिया गया था।

प्रतियोगिता में लैंगिक समानता पर हुई चर्चा

लखनऊ, लोकसत्य। लिंग संवेदनशीलता (जेनसेन) प्रकोष्ठ और लखनऊ विश्वविद्यालय की संस्था एलयूडेबसोक ने लखनऊ विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग के सभागार में एशियाई संसदीय वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया।

वाद-विवाद का विषय था: सदन इस धारणा का विरोध करता है कि लैंगिक समानता की अवधारणा व्यावहारिक से अधिक आदर्शवादी है। यह कार्यक्रम जेंडर संवेदनशीलता प्रकोष्ठ की संयोजक प्रो. रोली मिश्रा के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया। विभागाध्यक्ष प्रो. राकेश द्विवेदी ने प्रतिभागियों को धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अनविता, डॉ. गरिमा, डॉ रमेश कुमार त्रिपाठी, डॉ. रणविजय, डॉ. ओमेंद्र, डॉ. शैलजा सहित 200 से अधिक छात्र छात्राएं उपस्थित रहे।

विभाग के प्रोफेसर रूपेश कुमार ने प्रतिभागियों को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि सदन इस धारणा का विरोध करता है कि लैंगिक समानता की अवधारणा व्यावहारिक से अधिक आदर्शवादी है, यह विषय ही अपने आप में बहुत रोचक है। यह बताकर हमलोग को सोचने पर मजबूर कर रहा है कि क्या वास्तव में लैंगिक समानता की अवधारणा व्यावहारिक से अधिक आदर्शवादी है। विषय पर यह कार्यक्रम जेंडर संवेदनशीलता प्रकोष्ठ की संयोजक प्रो. रोली मिश्रा के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया। प्रतिभागियों ने विचार रखे। (जासं)

HT PAGE 2

Debate on gender equality held at LU

LUCKNOW : The Gender Sensitization (GenSen) Cell and LUDebSoc, the English debating society of Lucknow University organised an Asian Parliamentary Debate competition in the auditorium of psychology department on Monday. The topic was "The House Opposes the notion that the concept of gender equality is more idealistic than pragmatic." The team consisted of Ashok Bhaskar Srivastava (PM), Akanksha Singh (Dy PM), and Avram (Government Whip), while the Opposition Team was represented by Dorcas Tembo Sambo (LoP), Shrishti (Dy LoP), and Shumaila Khan (Opposition Whip). HTC

A leap forward: LU science faculty files for six patents

Signals Progress In Research

TIMES NEWS NETWORK

Lucknow: In another boost to its research endeavours, Lucknow University's science faculty has filed for six patents with the Indian patent office, an agency under the department for promotion of industry and internal trade which administers the Indian law of Patents, Designs and Trade Marks.

These patents have been filed by three faculty members of the zoology and physics departments.

Among the patents filed are a plant extract that can help cure osteoporosis in women with diabetes and a composition of anti-lung adenocarcinoma drugs and its method of preparation.

University officials said LU science department is reputed for its research and teaching in India and abroad. While LU departments file for patents regularly, it's after a decade that the university has applied for six patents simultaneously.

Assistant professor at LU zoology department, Madhu Gupta, has filed a patent for a product and process for the management of osteoporosis. "Filed a patent for the composite formulation of six plant extracts that will be used to treat secondary osteoporosis, which occurs in people with diabetes and other medical conditions," said Madhu.

LU's zoology department's Prof Mohd Serajuddin has filed a patent for invention and method of preparation relating to the field of synergistic formulation for developing a drug for the treatment of lung adenocarcinoma (the most common lung cancer).

Four patents have been filed by assistant professor Roli Verma of the physics department for developing a method for heavy metal detection in water, bleaching of dye in water, detection of food preservatives used in food products, and detection of impurities in water.

"These patents are a step towards advanced technologies and discoveries in various fields of science and technology," said LU spokesperson Durgesh Srivastava. He said all patents, like the one filed for secondary osteoporosis, will benefit people at large.

'35% girl students have low bone density'

Lucknow: About 65% of LU girl students and teachers have good bone health while 35% need to include calcium in their diet to meet the recommended values. This was revealed in a bone density test carried out by LU on Monday. The test was organised by the Institute of Women's Studies during a session on menopause titled 'Meno-Pause to Menopause'.

Dr Deepa Kapoor, director of gynecology at Tender Palm Hospital, spoke on the nuances of menopause, emphasizing its physical, emotional, and psychological aspects. Around 300 LU girl students and faculty took the test in which 223 (65%) girls had good calcium levels. Nodal officer of Mission Shakti, Manini Srivastava, highlighted the importance of creating awareness about menopause and the need for preemptive understanding of this transitional phase to ensure better health and well-being. TNN

LU girl students and teachers at the event on Monday

'Engineering management edu at LU for Education 5.0'

Prof Alok Kumar Rai

Management education has, since its inception, been confronted with numerous challenges. The structural delivery of management education has also had different models which kept changing their structure with the changes of industry, society and education. Hence, there have been different structures, degrees, treatments and expected outcome acting as an antecedent to determine the fate of management education in India.

The University of Lucknow has been a pioneer institution that started management education with MCom (Business Administration) in 1955 and MBA in 1975 under department of business administration under the aegis of faculty of commerce. With the maturing of LPG i.e. liberalisation, privatisation and globalisation, the universities realised the need for having specialised MBA programmes and this led to the establishment of a separate institute as Institute of Management Studies (IMS).

It becomes more important considering the challenges being posed in the modern dynamic world. The world has moved beyond Industry 4.0, Society 4.0 and Education 4.0 in a very short span. The world is coming back to an era where the role of individuals has again begins to hold sway. The onward progress of human civilization bears testimony to the various phases of industrialization that started from hunting to agriculture to machines to information and communication technology and completed a full circle by returning to human-centricity, resilience and sustainability. This is known as Industry 5.0. It added a personal human touch to the industry 4.0 pillars of automation and efficiency. Similarly, Society 5.0 called for a human-centred society that balances economic advancement with the resolution of social problems by a system that integrates cyberspace and physical space. It is imperative to realise that "a knowledge-intensive society" and "a data-driven society" will manifest as viable social dynamism looking into the possibilities of the new millennium.

To address this shift in society, Education 5.0 has been developed which talks about more humanized teaching, with a focus on students' social and emotional development and solutions that improve life in society. Education 5.0 focuses on developing 21st-century skills such as critical thinking, creativity, and problem-solving rather than just routine learning. The cogent reason behind this realization finds fruition in the possibilities of the National Educational Policy-2020 that gives fillip to this idea. Augmented with govt policies and rapid industrialisation, it led to increased interests by the students towards managing education and this came as a cause of re-engineering the offerings of management education at University of Lucknow and thus a full-fledged faculty of management studies was created and department of business administration of faculty of commerce has been renamed as department of management under Faculty of Management Studies.

BY INVITATION

The changes of the system and society infused greater application of IT tools across different functions of corporate decision making. This thus impacted the industry significantly and this brought in a need for a specialised programme in MBA and this led the University of Lucknow to start MBA Business Analytics. This programme was intended to incorporate the latest IT tools – AI, ML, DL, Neural Networks prevalent across different functions of Management.

Taking cue from governmental target of increasing Gross Enrolment Ratio and emphasizing upon bringing in more and more students closer to Access, Equity and Quality of education, online MBA and BBA programs were launched in the online mode. The university established a separate centre as Lucknow University Centre of Distance Education (LUCODE) which started these online programmes.

It is largely seen that management studies have diversified into areas that meet contemporary social concerns thereby also giving a direction to all those in pursuance of management studies to have it played out in more pragmatic ways, one that has more academic validation. Different professionals working across different industries are also required to upscale their managerial skills. To address this demand for management education of working professionals, the Executive MBA programme was initiated.

The faculty of management has made a continuous earnest effort to upscale its teaching, learning and pedagogical measures to be in sync with the needs of the changing times. The efforts of the faculty have borne fruit in recent times with the bolstering of the academic curricula in sync with the provisions of NEP 2020 and establishment of newer educational tools of AI and Simulation Labs. It is noteworthy that today out of the total on campus students, over 15% students are pursuing different management programs at UG and PG level.

(Writer is VC of Lucknow University. Views expressed here are personal)

TOI PAGE 2

LU prof's programme to boost social skills in autistic kids

Mohita.Tewari
@timesofindia.com

Lucknow: After extensive research of over four years, the education department of the Lucknow University has designed a six-month communication intervention programme that helps improve the social behaviour of autistic children by up to 85%.

The research demonstrated that utilising visual and auditory aids, including videos, audio clips, conversations, and images, proved beneficial in enhancing communication skills among autistic pupils. The study, conducted by Prof Amita Bajpai and her research scholar Nutan Pandey, focused on 10 autistic pupils, aged 4-8, from schools for special children in